.. shrI yAdagiri laxmInRisi.nha prapattiH ..

॥ श्री यादगिरि लक्ष्मीनृसिंह प्रपत्तिः ॥

लक्ष्मीनृसिंह ललनाम् जगतोस्यनेत्रीम्
मातृस्वभाव महिताम् हरितुल्य शीलाम्
लोकस्य मङ्गळकरीम् रमणीय रूपाम्
पद्मालयाम् भगवतीम् शरणम् प्रपद्ये ॥ १॥
श्रीयादनामकमुनींद्रतपोविशेषात्
श्रीयादशैलशिखरे सतत प्रकाशौ
भक्तानुरागभरितौ भवरोग वैद्यौ
लक्ष्मीनृसिंह चरणौ शरणम् प्रपद्ये ॥ २॥
देवस्वरूप विकृतावपिनैजरुपौ
सर्वोत्तरौ सुजन सरु निशेव्यमानौ
सर्वस्य जीवनकरौ सदृशस्वरूपौ
लक्ष्मीनृसिंह चरणौ शरणम् प्रपद्ये ॥ ३॥
लक्ष्मीशते प्रपदने सहकारभूतौ
त्वत्तोप्यति प्रियतमौ शरणागतानाम्
रक्षाविचक्षण पटू करुणालयौ श्री
लक्ष्मीनृसिंह चरणौ शरणम् प्रपद्ये ॥ ४॥
प्रह्लाद पौत्र बलिदानव भूमिदान
कालप्रकाशित निजान्य जघन्य भावौ
लोकप्रमाण करणौ शुभदौ सुरानाम्
लक्ष्मीनृसिंह चरणौ शरणम् प्रपद्ये ॥ ५॥
कायादवीय शुभमानस राजहंसौ
वेदान्त कल्पतरु पल्लव टल्लि जौतौ
सद्भक्त मूलधनमित्युदित प्रभावौ
लक्ष्मीनृसिंह चरणौ शरणम् प्रपद्ये ॥ ६॥
॥ इति श्री वंगीपुरम् नरसिंहाचार्य विरचितं
श्री यादगिरि लक्ष्मीनृसिंह प्रपत्तिः समाप्तं ॥

Encoded and proofread by Venkata N Vangeepuram
vangeepuram@rediffmail.com

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated December 19, 2004